(1.) सादृश्य सम्बन्ध :— यदि दो वस्तुएँ समान हों तो एक का विज्ञान उपस्थित होने पर दूसरे का भी विज्ञान उपस्थित हो जाता है, क्योंकि दोनों में समानता है। अर्थात् यदि दो चीजें एक-दूसरे के समरूप हैं तो एक का प्रत्यय हमें दूसरे के प्रत्यय की उपस्थिति की याद दिलाता है। किसी वस्तु का चित्र स्वभावतः मूल वस्तु की ओर हमारे विचार को ले जाता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी मकान के एक हिस्से का विचार दूसरे मिले-जुले हिस्से के विचार को जाग्रत करता है। इसी प्रकार जब हम किसी चोट का विचार करते हैं तो उससे उत्पन्न होने वाला दर्द सोचने लगते हैं। चित्र एवं चित्रित वस्तु में सादृश्यता सम्बन्ध है, मकान के दो हिस्सों में सामीप्य सम्बन्ध है एवं चोट और दर्द में कार्य-कारण सम्बन्ध है। इस प्रकार सादृश्य सम्बन्ध

Scanned with CamScanner

का आधार समानता है।

(2.) कालगत या देशगत साहचर्य सम्बन्ध :— इस साहचर्य सम्बन्ध के अनुसार यदि दो घटनाओं में एक घटना दूसरी घटना के बाद एक ही स्थान, एक ही समय में घटित हो तो उनमें देशगत या कालगत साहचर्य सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तथा एक के विज्ञान के उपस्थित होने पर दूसरे का विज्ञान भी उपस्थित हो जाता है।

(3.) कार्य-कारण सम्बन्ध :— इस साहचर्य सम्बन्ध के अनुसार भी एक विज्ञान के उपस्थित होने पर दूसरे का विज्ञान उपस्थित हो जाता है। उदाहरणार्थ:- अग्नि और ताप, विषपान और मृत्यु में एक के उपस्थित होने पर दूसरा भी उपस्थित हो जाता है। कारण-कार्य सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैज्ञानिक ज्ञान का आधार यही है। इसी कारण इसे सार्वभौम नियम भी स्वीकार किया गया है। इन तीनों नियमों से ही हमारे विज्ञानों में संयोग-वियोग होते रहते हैं जिनसे हमारा ज्ञान बढ़ता है। जिस प्रकार भौतिक जगत् में गुरुत्वाकर्षण नियम कार्य करता है उसी प्रकार विज्ञान (प्रत्यय) जगत् में साहचर्य नियम काम करता है।

हम उपर्युक्त तीनों साहचर्य नियम को प्राकृतिक सम्बन्ध कहते हैं। इस सम्बन्ध के अनुसार एक प्रत्यय स्वभावतः दूसरे प्रत्यय के साथ हो जाता है। कभी-कभी ऐसे दो प्रत्ययों में भी तुलना करते हैं जिनमें कोई प्राकृतिक सम्बन्ध नहीं होता है, इन सम्बन्धों को हम दार्शनिक सम्बन्ध कहते हैं। उपर्युक्त तीन साहचर्य सम्बन्धों के अतिरिक्त हम चार अन्य सम्बन्ध की भी चर्चा करते हैं, जो निम्नलिखित हैं —

Scanned with CamScanner

(1.) विपरीत सम्बन्ध :— एक समय में यदि एक विचार को सत्य मानें तो उसके विपरीत विचार को उसी समय अवश्य असत्य मानना होगा।

(2.) तादात्म्य सम्बन्ध :— जो विज्ञान एक समय उपस्थित हों तथा पुनः उनका तादात्म्य दूसरे समय में प्राप्त विज्ञानों से है।

(3.) गुण में मात्रा (Degrees in quality) :— जैसे, भार में, रंग में विभिन्न छायाओं में आदि।

(4.) मात्रा और संख्या :— जैसे गणित में, 2+2=4, 18 का 1/2 = 9 इत्यादि।

इस प्रकार ह्यूम के अनुसार सम्बन्ध की संख्या सात हुई। इनमें सादृश्य, कालगत, देश-गत तथा कार्य-कारण सम्बन्ध को प्राकृतिक तथा परिवर्तनीय माना गया है तथा शेष चार को अपरिवर्तनीय स्वीकार किया गया है। शेष चार को ~~प्रत्यात्मक~~ प्रत्ययात्मक सम्बन्ध भी कहा गया है; क्योंकि ये प्रत्ययों या विज्ञानों पर आधारित हैं।

Scanned with CamScanner